विषय-सूची

अध्याय : १ भारतीय दर्शन में सामाजिक चेतना १-१६

भारतीय दर्शन में सामाजिक चेतना का विकास (१); वेदों एवं उपनिषदों में सामाजिक चेतना (२); गीता में सामाजिक चेतना (४); जैन एवं बौद्ध धर्म में सामाजिक चेतना (६); रागात्मकता और समाज (८); सामाजिकता का आधार राग या विवेक ? (१०); सामाजिक जीवन में बाधक तत्त्व अहंकार और कषाय (११); संन्यास और समाज (१२); पुरुषार्थ चतुष्टय एवं समाज (१३)।

अध्याय : २ स्वहित बनाम लोकहित १७-३१

जैनाचार-दर्शन में स्वार्थ और परार्थ (१८); जैन-साधना में लोकहित (१८); तीर्थंकर (१९); गणधर (२०); सामान्य केवली (२०); आत्महित स्वार्थ नहीं है (२१); द्रव्य-लोकहित (२२); भाव-लोकहित (२२); पारमार्थिक-लोकहित (२२); बौद्ध दर्शन की लोकहितकारिणी दृष्टि (२२); स्वहित और लोकहित के सम्बन्ध में गीता का मन्तव्य (२९);

अध्याय : ३ वर्णाश्रम–व्यवस्था ३२-४२

वर्ण-व्यवस्था (३२); जैनधर्म और वर्ण-व्यवस्था (३२); बौद्ध आचार दर्शन में वर्ण-व्यवस्था (३४); ब्राह्मण कहना झूठ है (३५); वर्ण-परिवर्तन सम्भव है (३६); सभी जाति समान हैं (३६); आचरण ही श्रेष्ठ है (३६); गीता तथा वर्ण-व्यवस्था (३६); आश्रम-धर्म (४०); जैन-परम्परा और आश्रम-सिद्धान्त (४१); बौद्ध-परम्परा और आश्रम-सिद्धान्त (४२);

अध्याय : ४ स्वधर्म की अवधारणा ४३-४९

गीता में स्वधर्म (४३); जैनधर्म में स्वधर्म (४४); तुलना (४५); स्वधर्म का आध्यात्मिक अर्थ (४६); गीता का दृष्टिकोण (४८); ब्रेडले का स्वस्थान और उसके कर्तव्य का सिद्धान्त तथा स्वधर्म (४९);

अध्याय : ५ सामाजिक नैतिकता के केन्द्रीय तत्त्व ५०-९७

अहिंसा, अनाग्रह और अपरिग्रह

अहिंसा (५१), जैनधर्म में अहिंसा का स्थान (५१); बौद्धधर्म में अहिंसा का स्थान (५२); हिन्दू धर्म में अहिंसा का स्थान (५३); अहिंसा का

आधार (५४); बौद्धधर्म में अहिंसा का आधार (५६); गीता में अहिंसा के आधार (५६); जैनागमों में अहिंसा की व्यापकता (५७); अहिंसा क्या है ? (५७); द्रव्य एवं भाव अहिंसा (५८); हिंसा के प्रकार (५८); मात्र शारीरिक हिंसा (५८); मात्र वैचारिक हिंसा (५८); वैचारिक एवं शारीरिक हिंसा (५९); शाब्दिक हिंसा (५९); हिंसा की विभिन्न स्थितियाँ (५९); हिंसा के विभिन्न रूप (६०); संकल्प जा (संकल्पी हिंसा) (६०); विरोधजा (६०); उद्योगजा (६०); आरम्भजा (६०); हिंसा के कारण (६०); हिंसा के साधन (६०); हिंसा और अहिंसा मनोदशा पर निर्भर (६०); अहिंसा के बाह्य पक्ष की अवहेलना उचित नहीं (६३); पूर्ण अहिंसा के आदर्श की दिशा में (६४); पूर्ण अहिंसा सामाजिक सन्दर्भ में (६८); अहिंसा के सिद्धांत पर तुलनात्मक दृष्टि से विचार (६९); यहूदी, ईसाई और इस्लाम धर्म में अहिंसा का अर्थ विस्तार (७१); भारतीय चिन्तन में अहिंसा का अर्थ विस्तार (७१); अहिंसा का विधायक रूप (७५); बौद्ध एवं वैदिक परम्परा में अहिंसा का विधायक पक्ष (७६); हिंसा के अल्प-बहुत्व का विचार (७७); अनाग्रह (वैचारिक सहिष्णुता) (७९); जैनधर्म में अनाग्रह (७९); बौद्ध आचार-दर्शन में वैचारिक अनाग्रह (८२); गीता में अनाग्रह (८३) वैचारिक सहिष्णुता का आधार-अनाग्रह (अनेकान्त दृष्टि) (८४); धार्मिक सहिष्णुता (८५); धर्म एक या अनेक (८५); अनुचित कारण (८६); उचित कारण (८६); राजनैतिक सहिष्णुता (८८); सामाजिक एवं पारिवारिक सहिष्णुता (८९); अनाग्रह की अवधारणा के फलित (८९); अनासक्ति (अपरिग्रह) (९०); जैन धर्म में अनासक्ति (९०); बौद्धधर्म में अनासक्ति (९२); गीता में अनासक्ति (९३); अनासक्ति के प्रश्न पर तुलनात्मक दृष्टि से विचार (९४);

अध्याय : ६ सामाजिक धर्म एवं दायित्व ९८-११२

सामाजिक धर्म (९८); ग्राम धर्म (९८); नगर धर्म (९८); राष्ट्र धर्म (९९); पाखण्ड धर्म (९९); कुल धर्म (१००); गणधर्म (१००); संघधर्म (१००); श्रुत धर्म (१०१); चारित्र धर्म (१०१); अस्तिकाय धर्म (१०१); जैनधर्म और सामाजिक दायित्व (१०१); जैन मुनि के सामाजिक दायित्व (१०२); नीति और धर्म का प्रकाशन (१०२); धर्म की प्रभावना एवं संघ की प्रतिष्ठा की रक्षा (१०२); भिक्षु-भिक्षुणियों की सेवा एवं परिचर्या (१०२); भिक्षुणी संघ का रक्षण (१०३); संघ के आदेशों का परिपालन (१०३); गृहस्थ वर्ग के सामाजिक दायित्व (१०३); भिक्षु-भिक्षुणियों की सेवा (१०३); परिवार की सेवा (१०३); विवाह एवं सन्तान प्राप्ति (१०४);

जैन धर्म में सामाजिक जीवन के निष्ठा सूत्र (१०६); जैन धर्म में सामाजिक जीवन के व्यवहार सूत्र (१०६); बौद्ध-परम्परा में सामाजिक धर्म (१०८); बौद्ध धर्म में सामाजिक दायित्व (१०९); पुत्र के माता-पिता के प्रति कर्तव्य (११०); माता-पिता का पुत्र पर प्रत्युपकार (११०); आचार्य (शिक्षक) के प्रति कर्तव्य (११०); शिष्य के प्रति आचार्य का प्रत्युपकार (११०); पत्नी के प्रति पति के कर्तव्य (११०); पति के प्रति पत्नी का प्रत्युपकार (११०); मित्र के प्रति कर्तव्य (११०); मित्र का प्रत्युपकार (१११); सेवक के प्रति स्वामी के कर्तव्य (१११); सेवक का स्वामी के प्रति प्रत्युपकार (१११); श्रमणब्राह्मणों के प्रति कर्तव्य (१११); श्रमण-ब्राह्मणों का प्रत्युपकार (१११); वैदिक परम्परा में सामाजिक धर्म (१११)।